Maitreyi College ★ Chanakya Puri, New Delhi-110021 ★ LIBRARY

21.12.2023 (E)

Your Roll No....................

Sr. No. of Question Paper : 2448

Unique Paper Code – : 2055091003

Name of The Paper : हिन्दी भाषा और साहित्य का उद्‌भव और विकास (GE) -C

Name of The Course : B.Com.(Programme)

Semester : : I

Duration : 3 Hours

Maximum Marks: 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

क) प्रश्न पत्र के प्राप्त होते ही उपर निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित से से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये:- (12+12=24)
   क) हिन्दी भाषा का सामान्य परिचय दीजिए।
   ख) खड़ी बोली की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
   ग) कृष्ण भक्ति काव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
   घ) भारतेन्दु युगीन काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

2. कबीरदास की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए। (12)

   अथवा

   सूरदास वात्सल्य के कवि हैं। स्पष्ट कीजिए।

3. बिहारी अथवा घनानंद का साहित्यिक परिचय दीजिए। (12)

4. 'पुष्प की अभिलाषा' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए । (12)

   अथवा

   'रोटी और संसद' कविता के काव्य सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (10X3 = 30)

   क) निंदक नियरे राखिए ऑगन कुटी छवाय।
   बिन पानी साबुन बिना निर्मल करै सुभाय।
   पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहार ।
   ताते यह चाकी भली पीस खाए संसार ।

munotes.in

अथवा

ख) उधो, मन न भए दस बीस
एक हुतो सो गयौ स्याम संग, को अराधै ईस।
इंद्रि सिथिल भई केसव बिनु , ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।
तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारै नंद-नंदन बिन , और नहीं जगदीस।

ग) थौरे ही गुन रीझते बिसराई वह बानि।
तुमहू कान्ह मनौ भए आजकाल्हि के दानी।

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं नैननु हीं सौ बात।

अथवा

राबरे रूप की रीति अनूप , नयौ नयौ लागत जैतो निहारियै।
त्यौ इन ऑखिन बानि अनौखी, अघानि कहूं नहिं आन तिहारियै।
एक ही जीव हुतौ सुतौ वारयौ, सुजान संकोच औ सोच सहारियै।
रोकी रहै न, दहै घन आनंद, बावरी रीझ के हाथनि हारियै।

घ) मुझे तोड़ लेना बनमाली ,
उस पथ पर तुम देना फेंक ,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जाएं वीर अनेक ।

अथवा

एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है ।

munotes.in